बिहार में नक्सलवादः समस्या एवं समाधान

संतोष कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
ईमेलः santoshkrlnmu@gmail.com

सारांश

नक्सलवाद कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के उस आंदोलन का अनौपचारिक नाम है जो भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ। नक्सल शब्द की उत्पत्ति पश्चिम बंगाल के छोटे से गाँव नक्सलबाड़ी से हुई, जहाँ भारतीय कम्युनिस्ट के नेता चारू मजूमदार और कानू सान्याल ने 1967 में सत्ता के खिलाफ एक सशस्त्र आंदोलन की शुरूआत की। उनका मानना था कि भारतीय मजदूरों और किसानों की दुर्दशा के लिए सरकारी नीतियाँ जिम्मेदार हैं जिसकी वजह से उच्च वर्गों का शासनतंत्र और कृषितंत्र पर वर्चस्व स्थापित हो गया। इस न्यायहीन दमनकारी वर्चस्व को केवल सशस्त्र क्रांति से ही समाप्त किया जा सकता है। 1967 में नक्सलवादियों ने कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की एक अखिल भारतीय समन्वय समिति बनाई। इन विद्रोहियों ने औपचारिक तौर पर स्वयं को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से अलग कर लिया और सरकार के खिलाफ भूमिगत होकर सशस्त्र लड़ाई छेड़ दी। सामाजिक जागृति के लिए शुरू हुए इस आंदोलन पर कुछ सालों के बाद राजनीति का वर्चस्व बढ़ने लगा और आंदोलन जल्द ही अपने मुद्दों और रास्तों से भटक गया। जब यह आंदोलन फैलता हुआ बिहार पहुँचा तब यह अपने मुद्दों से पूरी तरह भटक चुका था। अब यह लड़ाई जमीनों की लड़ाई न रहकर जातीय वर्ग की लड़ाई शुरू हो चुकी थी। यहाँ से शुरू होता है उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग के बीच का उग्र संघर्ष जिसने नक्सल आंदोलन को एक नया रूप दिया।

मुख्य बिन्दु

नक्सलवाद, सशस्त्र–आंदोलन, कृषितंत्र, दमनकारी, कम्युनिस्ट, भूमिगत, जातीय–संघर्ष।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 23.02.2023
Approved: 21.03.2023

संतोष कुमार

बिहार में नक्सलवादः समस्या एवं समाधान

RJPP Oct.22-Mar.23,
Vol. XXI, No. I,

pp.148-151
Article No. 20

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2023-vol-xxi-no-1

प्रस्तावना

आरंभ में इस समूह ने कृषक समाजों में सशक्तता को विकसित करने पर जोर दिया, जिसके कारण किसानों को सशस्त्र संघर्ष करने को तैयार किया जा सके। साथ ही बेनामी भूमि पर जबरन कब्जा करने के लिए संघर्ष में कृषकों से भाग लेने के लिए कहा, परन्तु बाद मेंउन्होंने गुरिल्ला युद्ध के माध्यम से शत्रुओं को समाप्त करने पर बल दिया। नक्सलबाड़ी आंदोलन ने पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश पर सबसे ज्यादा प्रभाव डाला तथा उसके बाद इस आंदोलन ने बिहार को बुरी तरह प्रभावित किया। नक्सली आंदोलन ने बिहार के दबे और सताये हुए समुदायों को आकर्षित किया। आंदोलन के पहले चरण में मुसहरी, सूर्यगढ़ा, संथाल परगना में नक्सलबादी सक्रिय हुए।[1] पार्टी के नेतृत्व में क्रांतिकारी राजनीति के प्रचार–प्रसार के जरिए भूमिहीन–गरीब किसानों के गुप्त दस्ते बनाए जाने लगे और जालिम भूस्वामियों का सफाया अभियान शुरू हुआ। यह आक्रमण सबसे पहले सामाजिक उत्पीड़न के खिलाफ हुआ, क्योंकि सामन्त वर्ग के क्रूर सामाजिक उत्पीड़न ने उनके जीवन को सबसे ज्यादा दयनीय और पशुवत बना दिया था। मार्च 1972 में पहले सफाये के बाद पटना जिले की मुसहर टोलियों और अन्य दलित बस्तियों में गुप्त दस्ते बनने लगे थे।[2] साथ ही मजदूरी की लड़ाई फसल दखल और छिटपुट जमीन दखल जैसे आर्थिक जन आंदोलन भी यदा–कदा फूट पड़ते थे।

बड़े भूस्वामियों का उग्र हिस्सा इन समुदायों के बीच उठ खड़े होने के किसी भी प्रयास का बर्बरता पूर्वक दमन करता रहा। अपने राजनीतिक प्रतिनिधियों के संरक्षण में तथा उनके सहयोग और समर्थन से अपनी जाति के लोगों को संगठित और हथियारबंद कर दलित बस्ती को घेरकर आग लगाया गया और सामूहिक नरसंहार को अंजाम दिया गया। 1971 में पूर्णिया जिले के चंदवा रूपसपुर गांव के 14 आदिवासियों को जिन्दा जला दिए जाने की घटना से इन नरसंहारों की शुरूआत हुई। 1971 के बाद बहुत ही थोड़े समय में भोजपुर के सहार, संवेग, पीरो, जगदीशपुर, गड़हनी के नक्सली के प्रभाव सुगबुगाने लगे। गांवों में जमीन दखल, सामाजिक अत्याचार के खिलाफ दलित–पिछड़े गोलबंद होने लगे। भूस्वामियों पर हमले की शुरूआत हुई। दुसाध, मुसहर, चमार, ग्वाला, कोइरी जैसी जातियों ने संघर्ष की कमान थामी। इस प्रकार बिहार में नक्सलवाद के छत्रछाये में जातीय संघर्ष सवर्ण बनाम निम्न वर्ग के बीच आरंभ हुआ।[3] जिसका व्यापक दुष्प्रभाव बिहार के आर्थिक विकास, जान–माल तथा सामाजिक परिवेश पर पड़ा। सरकार भी ये तय नहीं कर सकी कि नक्सलवाद कानून–व्यवस्था की समस्या मानी जाय अथवा एक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्या माना जाय। सरकार नक्सलवादी आंदोलन के प्रति करा रूख अपनाती है तो नक्सलवादी आंदोलन को खत्म किया जा सकता है। वर्तमान में नक्सलवादएक जटिल समस्या बनी हुई है, जिसे हल करना असंभव नहीं बल्कि मुमकिन है। यह देश व राज्य के लिए एक गंभीर चुनौती है।

भारत में नक्सली आंदोलन का प्रभाव पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, मध्य प्रदेश, वर्तमान झारखंड में स्पष्टतः दृष्टिगत होता है। बिहार के इतिहास के पन्ने को यदि पलटा जाए तो एक बात स्पष्ट होती है कि ऊँची जाति की मनोवृत्तियों और शोषणकारी कार्य प्रणाली ने कभी त्रिवेणी संघ जैसे पिछड़ी जाति के संगठनों को अस्तित्व में लाने का कारण बना तो बाद में सहजानंद सरस्वती के किसान आंदोलनों ने जातियों के बीच जागृति और चेतना के संचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। लेकिन,

इन सभी जातिगत चेतनाओं ने जातीय संघर्ष की बुनियाद रखी, जिसकी जड़ में असमान भूमि प्रबंधन और आत्मसम्मान का प्रश्न रहा जो बाद में नक्सलवाद के दर्शन के साथ ही विभिन्न जनसंहारों और संघर्षों के परिणाम के रूप में प्रस्तुत हुआ। बिहार के अधिकांश जिले नक्सलवाद की चपेट में हैं जिसकी शुरूआत कभी मुजफ्फरपुर के मुसहरी और भोजपुर के क्षेत्र रहे और आज पश्चिम चंपारण का जंगल हो या जमुई मुंगेर के पठारी क्षेत्र या कैमूर का विंध्य पहाड़ी, सभी ओर नक्सलवाद की जड़े मजबूत दिखाई देती हैं। कभी गया, औरंगाबाद, भोजपुर, पार्टी, यूनिटी, माओबादी, कम्युनिस्ट सेंटर और लिबरेशन जैसे नक्सली गुटों का केन्द्र रहा और मंडलवाद के दौर में इन्हीं जिलों में विभिन्न खूनी संघर्ष हुआ और रणवीर सेना जैसे ऊँची जातियों के संगठन और पूर्व में कुंवर सेना, लोरिक सेना, Jh—'.kl sk] cã f'kZ sk bR;kfn ds: i esa n§kk x;kA[4]

राजद शासन काल में जो खूनी जनसंहार हुआ, जिसका आधार जातीय गोलबंदी थी। वह कुछ दिनों के लिए भले ही रूक गया लेकिन बिहार के अधिकतर क्षेत्रों में नक्सलवाद के नाम पर यादव बनाम आदिवासी का संघर्ष देखा जाता रहा। अब तक बिहार में जो भी नक्सली गुट रहे हैं उनमें विशेष रूप से एम. सी. सी. और माले प्रमुख रूप से सक्रिय रहे, जिनका आधार दलित जातियाँ रही हैं। इस प्रकार बिहार में स्थापित सामंती व्यवस्था ने नक्सलवाद को उभरने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नक्सलियों के बीच लालू प्रसाद यादव से सहानुभूति रखने वाले लोग हैं, खासकर माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर में जो यादवों द्वारा ही संचालित होती है।[5] सबसे चर्चित नरसंहार सेनारी नरसंहार जिसमें 34 लोगों की हत्या की गई थी, लक्ष्मणपुर बाधे में सबसे बड़ा और नृशंस नरसंहार किया गया था। इस बड़ी घटना को रणवीर सेना ने 30 नवंबर और 1 दिसम्बर की रात को अंजाम दिया था। जिसमें कुल 88 लोगों की हत्या की गई थी। शंकर बिगहा नरसंहार जो 25 जनवरी 1999 की रात घटित हुई थी जिसमें 22 दलितों की हत्या कर दी गई थी। इसी प्रकार 1996 में बथानी टोला नरसंहार, गया जिले में बारा गाँव नरसंहार (12 फरवरी 1992) जिसमें अगड़ी जाति के 35 लोगों की गला रेत कर हत्या कर दी थी, औरंगाबाद जिले के मियांपुर नरसंहार (16 जून 2000), जिमसे 35 दलितों की हत्या कर दी गई थी। बेल्छी नरसंहार जो 1977 में घटित हुई थी जिसमें 14 दलितों की हत्या कर दी गई थी। कुल मिला कर राजद शासन काल में नक्सलियों का प्रभाव अधिक हो गया था। जिसके कारण नरसंहारों का ग्राफ भी बड़ा। परन्तु नक्सलवादी समस्या के समाधान में कोई भी सरकार विशेष दिलचस्पी नहीं ली। लालू प्रसाद का शासन काल प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष 15 वर्षों का रहा, परन्तु इन्होंने नक्सलियों की समस्या के समाधान के बारे में कुछ सोचा ही नहीं, बल्कि नक्सलियों से सांठ–गांठ कर अपनी सत्ता को बनाये रखा और बिहार के आर्थिक विकास को अवरुद्ध किया। साथ ही बिहार की सामाजिक व राजनीतिक परिवेश को दूषित किया।

निष्कर्ष

नक्सलबाड़ी आंदोलन पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी गाँव से फरवरी 1967 में आरंभ हुआ। इस आंदोलन के अग्रणी नेता चारू मजुमदार तथा कानू सान्याल थे। इन्होंने बेनामी भूमि पर जबरन कब्जा करने हेतु स्थानीय कृषकों को प्रोत्साहित किया। नक्सलबाड़ी आंदोलन की गुरिल्ला कार्यवाही ने पश्चिम बंगाल और आंध्रप्रदेश में सबसे ज्यादा प्रभाव डाला। इसके बाद यह

आंदोलन बिहार को बुरी तरह प्रभावित किया। बिहार में बड़े–बड़े भूस्वामियों का उग्र हिस्सा निम्न वर्गीय किसान मजदूर के बीच उठ खड़े होने के किसी भी प्रयास का बर्बरतापूर्वक दमन करता रहा। अपने राजनीतिक प्रतिनिधियों के संरक्षण में तथा उनके सहयोग और समर्थन से अपनीजाति के लोगों को संगठित और हथियार बंद कर दलित बस्ती को घेरकर आग लगा देना और सामूहिक नरसंहार इस दमन का एक प्रचलित जघन्य रूप रहा। अस्सी व नब्बे के दशक में बड़े भूस्वामियों द्वारा जाति आधारित निजी सेनाओं के गठन और उनके द्वारा नरसंहार की एक–के बाद एक कई लोमहर्षक घटनाएँ घटीं। एमसीसी द्वारा जबावी दलेलचक–बघौरा नरसंहार भी हुआ, बेलछी, पिपरा की घटनाएँ भी घटित हुईं। वस्तुतः नक्सली आंदोलन बिहार के दबे और सताये हुए समुदायों को आकर्षित किया। आंदोलन के पहले चरण में मुसहरी, सूर्यगढ़ा संथाल परगना आदि स्थानों में नक्सलवादी सक्रिय हुए। साथ ही नक्सली आंदोलन तीव्रतर होता गया और जातीय विद्वेष भी फैलता गया। इस प्रकार बिहार में अगड़ी व पिछड़ी गुटों में जातियाँ बंटती गई और नरसंहारों का सिलसिला बढ़ता ही गया। लालू प्रसाद के शासनकाल में नक्सलियों की समस्या के समाधान पर ध्यान नहीं दिया गया। नीतीश सरकार पिछले वर्षों से इसके बढ़ते प्रभाव को कुचलने के लिए व्यापक योजना के तहत कार्य कर रही है। परन्तु समुद्र के पानी की तरह फैला यह नक्सलवाद रूपी कैंसर का सर्जरी कर पाना बड़ी कठिन समस्या है।

संदर्भ

1. श्रीकांत. (2005). बिहार में चुनाव : जाति, हिंसा और बुथ लूट. वाणी प्रकाशनः नयी दिल्ली. पृष्ठ **38.**
2. चौधरी, प्रसन्न कुमार., श्रीकांत. (2010). बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम. वाणी प्रकाशनः नयी दिल्ली. पृष्ठ **230.**
3. प्रसाद, ईश्वरी. (2011). विकास का वैकल्पिक रास्ता, आलेख, बिहार रास्ते की तलाश. (सं०) हरिवंश एवं फैसल अनुराग. प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली. पृष्ठ **100.**
4. शर्मा, अलख नारायण. (2011). बदलते कृषि–संबंध और सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन, आलेख, बिहार रास्ते की तलाश. (सं०) हरिवंश एवं फैसल अनुराग. प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली. पृष्ठ **109.**
5. उपाध्याय, नवीन. (2011). बिहार की दुर्दशा और लालू प्रसाद, आलेख, बिहार रास्ते की तलाश. (सं०) हरिवंश एवं फैसल अनुराग. प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली. पृष्ठ **289.**
6. कुमार, मनोज. (2006). नक्सल फेनोमेनन इन बिहारः जर्नल ऑफ पीस एण्ड कन्पिलक्ट स्टडीज. न्यू दिल्ली. नवम्बर।